REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेश व विद्यालय स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।''

रवि शंकर[1] , वीरेन्द्र कुमार[2] , डॉ. सन्तोष अरोरा[3]
[1] शोध छात्र बी.एड./एम.एड. विभाग विभाग महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
[2] शोध छात्र बी.एड./एम.एड. विभाग विभाग महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
[3]प्रोफेसर, बी. एड./एम.एड.विभाग महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

सारांश

विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा व्यक्ति को वर्तमान में श्रेष्ठ करने व श्रेष्ठ बनने के प्रति प्रेरित करती है। शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षा के लिए औपचारिक शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा महत्वपूर्ण होती है किन्तु विद्यार्थियों की व्यावासयिक आकांक्षा को उनका पारिवारिक वातावरण, सामाजिक परिवेश वा विद्यालय स्वरूप और उनका आर्थिक स्तर प्रभावित कर सकता है। इसलिए प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेश व विद्यालय स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेश व विद्यालयी स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु 100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिकीकृत विधि से किया गया है। आँकड़ों की प्राप्ति के लिए प्रमापीकृत परीक्षण '' व्यावसायिक आकांक्षा प्रश्नावली (OAS)'' डा0 जे. एम. ग्रेवाल (1998) का प्रयोग किया है। अध्ययन में पाया गया कि पारिवारिक संरचना का विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षाओं पर प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि सामाजिक परिवेश और विद्यालय स्वरूप का विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शहरी परिवेश के विद्यार्थियों व्यावासयिक आकांक्षा ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी जाती है। इसी प्रकार पब्लिक स्कूल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा सरकारी स्कूल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी है।

प्रमुख शब्द :–माध्यमिक स्तर , व्यावसायिक आकांक्षा, पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेश व विद्यालय स्वरूप।

प्रस्तावना :–

सामान्यतः जब व्यक्ति अपनी किशोरावस्था को पार करता है तब वह सोचता है कि वह बड़ा होकर क्या बनेगा? प्रारम्भिक व्यावसायिक विकासात्मक सिद्धान्तों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बाल्यावस्था बालक के व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आयु लगभग 14 वर्ष या 15 वर्ष के बीच की होती है बाल्यावस्था के समाप्त होने तथा किशोरावस्था व्यावसायिक आकांक्षा की प्रारम्भिक अवस्था होती है। इस आयु पर किशोरभावी व्यवसाय के लिए सोचता है।

स्कूल विषयों के चयन की नींव माध्यमिक स्तर से ही पड़ जाती है और छात्र भावी व्यवसाय को ध्यान में रखते हुए विज्ञान विषय, वाणिज्य विषय, कृषि, कला आदि वर्गों के विषयों का चयन करता है।

व्यावसायिक आकांक्षा

सामान्यतः हम आकांक्षा शब्द का प्रयोग उद्देश्यों, महत्वाकांक्षाओं, लक्ष्यों, स्वपनों अभिलाषाओं, इच्छाओं के पर्यायवाची के रूप में करते हैं। आकांक्षा व्यक्ति को वर्तमान में श्रेष्ठ करने व श्रेष्ठ बनने के प्रति प्रेरित करती है। वर्तमान में हम जानते हैं कि हम क्या हैं? किन्तु भविष्य में क्या हो सकते हैं?यह सुनिश्चित नहीं कर पाते हैं। इसलिए हमें आकांक्षाओं में विभेद करना अनिवार्य हो जाता है। प्रथम शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा द्वारा गुणवत्ता पूर्ण जीवन जीने की आकांक्षा शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षा के लिए उसके औपचारिक शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा महत्वपूर्ण होती है। किन्तु विद्यार्थियों की व्यावासयिक आकांक्षा को उनका पारिवारिक वातावरण, सामाजिक परिवेश वा विद्यालय स्वरूप और उनका आर्थिक स्तर प्रभावित कर सकता है। व्यावसायिक आकांक्षा पर माता पिता के लैंगिक सन्दर्भ में **ट्रेस एण्ड नेप(1992)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बच्चे पिता की व्यवसाय की अपेक्षा माता के व्यवसाय से अधिक सीखते हैं।**मैकन्डलस, ल्यूकटो एण्ड मैकन्डलस (1997)** ने अपने शोध में पाया कि परम्परागत लिंग आधारित/रूढ़वादी धारणाओं की मुख्यतः उच्च आप स्रोतों वाले परिवारों में व्यावसायिक चयन में मुख्य भूमिका है।**हैलविंग (1998)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बच्चों की व्यावसायिक आकांक्षा ''उनके माता पिता को व्यावसाय विशेष के प्रति दृष्टिकोण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **मैकमोहन एवं अन्य (2001)** ने अपने अध्ययन में पाया कि टीवी और छात्रों के सामाजिक वातावरण का प्रभाव उनके आकांक्षा स्तर पर पड़ता है। ऐसे विद्यार्थी जिनके परिजन एवं मित्र टीवी पर भूमिका अदा करते हैं उन विद्यार्थीयों का आकाक्षा स्तर अधिक पाया जाता है। ओमरेण्ड (2004) ने बताया कि मित्र और समकक्ष समूह एक व्यक्ति के व्यावसायिक आकांक्षा के निर्धारण में महत्वपर्णू भूमिका अदा करते हैं।**वाट्सन एण्ड मैकमोहन (2005)** कि ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला बच्चे सामाजिक वातावरण की अन्तः क्रिया से व्यवसायों का चयन करते हैं। व्यवसाय के प्रति प्रतिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।**कुमार,ज्ञानेन्द्र (2009)** ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावासयिक आकांक्षा परपारिवारिक संरचना का प्रभाव नहीं पडता है। **ओसोदोह और एल्यूटो (2011)** ने अपने अध्ययन में देखा कि विद्यार्थियों के निर्णय लेना और व्यवसाय को चुनना एक गंभीर समस्या है। परिवारों का धन और सम्पदा की ओर झुकाव उनके सामाजि, आर्थिक स्तर के अनुसार उनकों निम्न, माध्य ओर उच्च वर्गों में विभाजित करता है। यह वर्ग विभाजन परिवारों के सामाजिक जागरूकता और स्वच्छिक उपलब्धि से प्रभावित हो सकता है। **केन्टली, एफ.डी. (2013)** ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यावसायिक चयन एक विकासात्मक प्रक्रिया है जो आकांक्षाओं के उद्भवन के साथ प्रारम्भिक वर्षों में प्रारम्भ होती है। अधिकांश विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता कार्य मूल्य और योग्यतायें काफी भिन्न होती हैं। इसलिए छात्रों को मार्गदर्शन कार्यक्रमों में विविधताओं एवं व्यावसायिक अवसरों की आवश्यकता पड़ती है। कुछ व्यवसायों में लड़कों की अकांक्षा अधिक पायी गयी जबकि कुछ में विपरीत परिणाम प्राप्त हुए। **लाल, कृष्ण (2014)** ने पाया कि अधिकतर पुरूष किशोरों में व्यावसायिक सम्बन्ध व्यावसायिक चयन एवं उच्च व्यावसायिक आकांक्षा पायी गयी। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में व्यावासयिक चयन में अधिक स्वतन्त्रता पायी गयी।

सीमांकन :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से तात्पर्य मा0शि0 परिषद उ0प्र0के अधीन संचालित विद्यालयों में कक्षा में 9 अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।
2. पारिवारिक संरचना से तात्पर्य एकल एवं संयुक्त परिवारों से है।
3. सामाजिक परिवेश से आशय शहरी एवं ग्रामीण परिवेश में रहने वाले विद्यार्थियों से है।
4. विद्यालय स्वरूप से तात्पर्य माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त सरकारी/अर्द्ध सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों से है।

उद्देश्य :–

1. एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
2. सरकारी स्कूल एवं गैर सरकारी स्कूल में अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में रहने वाले एकल एवं संयुक्त परिवारों के व्यावसायिक अकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में सार्थक अंतर नहीं है।
2. सरकारी स्कूल एवं गैर सरकारी स्कूल में अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में सार्थक अंतर नहीं है।
3. ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में रहने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु कक्षा 9 के 100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिकृत न्यादर्श विधि से किया गया। जो विभिन्न प्रकार की सामाजिकसंरचना एवं सामाजिक पृष्ठभूमि के हैं।

उपकरण :–अध्ययन हेतु प्रमाणीकृत उपकरण, व्यावसायिक आकांक्षा प्रश्नावली (OAS) डा0 जे0 एम0 ग्रेवाल (1998) का प्रयोग किया। इस प्रश्नावली के अन्तर्गत आठ प्रश्न दिये गये हैं सभी प्रश्नों के 10–10 विकल्प हैं। विद्यार्थियों को व्यावसायिक आकांक्षाओं के अनुरूप किसी एक विकल्प का चयन करना है।

आंकड़ों के विश्लेषण :–आंकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित तालिकाओं की सहायता से किया गया है।

तालिका नं01–एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा।

पारिवारिक संरचना	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	सारणी मान	टी– मान
एकल परिवार	65	55.27	4.83	1.66	1.51*
संयुक्त परिवार	35	53.25	7.10		

* 0.1 सार्थकता स्तर –

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि एकल और संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों व्यावसायिक आंकाक्षा के मध्य टी–मान 1.51 प्राप्त हुआ जो विश्वसनीयता के 0.1 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है तथा इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पारिवारिक संरचना का विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षाओं पर प्रभाव नहीं पड़ता है। मध्यमान के ऑकडों से यह ज्ञात होता है कि एकल परिवार (55.27) की संयुक्त परिवार(53.25) की तुलना में व्यावसायिक आकांक्षा अधिक है। इसका प्रमुख कारण यह भी हो सकता है कि एकल परिवार के विद्यार्थियों पर केवल उनके माता–पिता का ही प्रभाव पडता है जिससे उनकी व्यावसायिक आकांक्षा अधिक पायी जाती है। इसके विपरीत संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों पर परिवार के अन्य सदस्यों का भी प्रभाव पडता है।**ज्ञानेन्द्र कुमार, (2009)**के अध्ययन से यही परिणाम प्राप्त हुए हैं कि पारिवारिक संरचना का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावासयिक आकांक्षा स्तर को प्रभावित नहीं करती है।

तालिका नं02-सरकारी स्कूल एवं गैर सरकारी स्कूल में अध्ययनरत विद्याथियों की व्यावसायिक आकांक्षा।

विद्यालय स्वरूप	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	सारणी मान	टी– मान
सरकारी स्कूल	40	53.09	4.98	1.98	3.10**
गैर सरकारी स्कूल	60	56.60	6.32		

** 0.5 सार्थकता स्तर –

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि गैर सरकारी स्कूल एवं सरकारी स्कूल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक आकांक्षाओं का टीमान 3.10प्राप्त हुआ जो विश्वसनीयता के 0.5 स्तर पर प्राप्त सारणी मान 1.98 से अधिकहै। अतः शून्य परिकल्पना गैर सरकारी स्कूल व सरकारी स्कूल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है को अस्वीकृत किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालयों के स्वरूप का विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षाओं परसकारात्मक प्रभाव पडता है। जबकि मध्यमान के ऑकडों से यह ज्ञात होता हैकि गैर सरकारी स्कूल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा, सरकारी स्कूल में अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा से अधिक है। इसके सम्भावित कारण माता पिता की जागरूकता, पूर्व छात्र सम्मेलन के आयोजन, प्रेरणात्मक व्याख्यान और निर्देशन एवं परामर्शन आदि कार्यक्रमों का आयोजन हो सकते हैं।

तालिका नं03–ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा ।

सामाजिक परिवेश	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	सारणीमान	टी–मान
ग्रामीण परिवार	52	53.85	6.23	1.98	2.29**
शहरी परिवार	48	56.90	7.07		

**0.5 सार्थकता स्तर –

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में रहने वाले विद्यार्थियों के मध्य आंकाक्षांओं का टी–मान 2..29 प्राप्त हुआ जो विश्वयनीयता के 0.5 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना को निरस्त किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवेश का विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षाओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जबकि मध्यमान के ऑकडों से यह विदित होता है कि ग्रामीण परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा, शहरी परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा,विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा से कम है।इसके सम्भावित कारण एकल एवं सीमित परिवार, अभिभावकों शिक्षा एवं जागरूकता तथा उपलब्ध सुबिधाओं हो सकते हैं। **हैलविंग (1998)** ने भी यही निष्कर्ष निकाला कि बच्चों की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके माता पिता के दृष्टिकोण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ऑकडों का रेखीय आकृति द्वारा निरूपणः–

आयत चित्र द्वारा विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का प्रस्तुतीकरण –

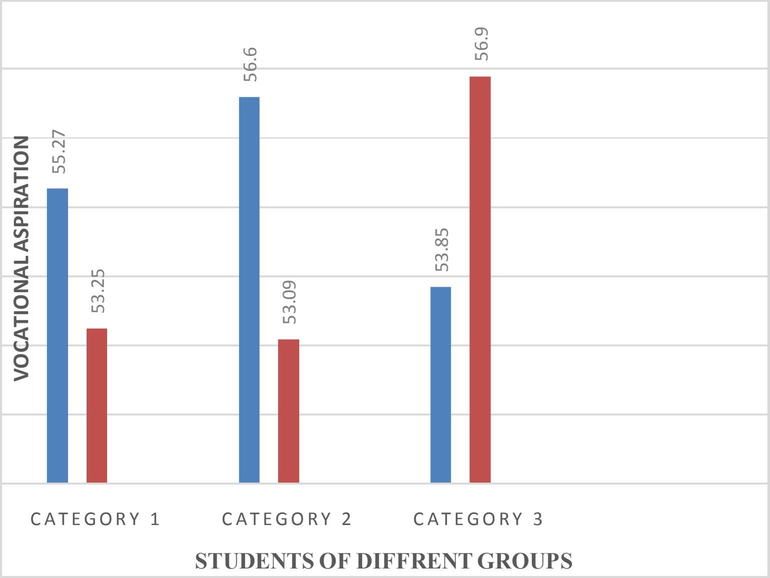

CAT-1 एकल परिवार
संयुक्त परिवार
CAT-2सरकारी स्कूल
गैर सरकारीस्कूल
CAT-3ग्रामीणपरिवार
शहरीपरिवार

निष्कर्ष –

आंकड़ो के विश्लेषण उपरांत निष्कर्ष में यह पाया गया है कि एकल एवं संयुक्त परिवार विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में एकल परिवारके विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पाई गई। गैर सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियो की अपेक्षा उच्च है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. Jambo, Tamunoimama (2014). Relationship between Parents Socio-Economic Variables and Adolescents: Vocational Aspiration. Journal of Education and Practice.5(13).169. **www.iiste.org/Journals/index.php/JEP/article/viewfile/12761/13070**
2. Kapil, H.K.(1970). Research Methods Agra. Agrawal Publication.
3. Karlingar, F.N.(1964). Foundation of Behavioral Research New-York.
4. Kentli, F.D.(2013). Influential Factors onStudents Vocational Aspiration in Turkish Elementary Schools. Academic Journals. 9(1). 3440. **www.academicjournals.org/journal/article/article/1389947212_Kentli.pdf**
5. Kalita,U.(2014).Occupational aspiration and school facilities of secondary school students clarion: International Multidisciplinary Journal (3).118 123. www.theclarion.in/ index.php/clarion/article/veiw/152/168
6. Lal, Krishna (2014). Career Maturity in relation to Level of Aspiration in adolescents. American International Journal of Research in Humanities,Arts, and Social Sciences.(5)1.113-118. www.iasir.net/AIJRHASSpapers/AIJRHASS14-147.pdf
7. Mc-Mohan, M., Carrol, J. et.al.(2001) Career Dreams : Occupation aspiration of year six Children. Australian Journal of Career Devlopment.10pp25-31. https://www.researchgate.net/…/27479465_carrer_dreams_occupational_aspiratio
8. Mc-Candles, N., Lueptow, L. &Mckee, M. (1989).Family socio-economic status and Adolescent sex type and gender. British journal of social Psychology, 11-127. www.iiste.org/journal/index.php/JEEP/article/viewFile/12761/13070.
9. Omerod, J.E. (2004). Human learning New Jersey. Prentice hall.
10. Osa-Edoh, G.I. & Alutu, A.N.G.(2011). Parents Socio-Economic Status and its effects in student Educational Values and Vocational choice. European Journal of Educational Studies.3(1),11-21. www.researchjournal.co.in./upload/assignments/6_42-46_999pdf
11. Watson & Mc-Mohan (2005).Children's Career Development Research Review From Learning Perspective. Journal of Vocational Behaviour.67.119-132.http://dx.doi.org/10.1016/j.jvb.2004.08.011.
12. कुमार, ज्ञानेंद्र(2009)। माध्यमिक स्तर के सी0 बी एस0 सी0 बोर्ड के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आंकाक्षा का एकल और संयुक्त परिवार केपरिप्रेक्ष्य में अध्ययन। डॉ. भीमराव अम्वेडकर वि0 वि0 विद्यालय आगरा।